हर स्वांश में राम है बसता
दिल में उसके सिवाय न कोई रहता
पाया मैंने उनसे अखुट खजाना
ज्ञान रत्नों का भंडारा उसका
हर मोती का मोल है लाखों
भूलू न उनको वो पल वो दिन न आये
याद में हरदम बस रहूँ गीत मन गाये
कल्प कल्प हम ऐसे मिलते रहेंगे
ज्ञान अमृत पी अमर होते रहेंगे
विश्व बादशाही लें फिर गंवाते रहेंगे
माया के चुंगल से फिर आकर छुडाते रहेंगे
अनादि खेल की बाझोली खेलते रहेंगे
विजय और हार को साक्षी हो देखते रहेंगे
जन्म जन्मान्तर अपना भाग्य बनाया
पद्मा पदमपति बनकर दिखलाया
संगम पर अति इंद्रिय सुख को पाया
परमात्म पालना का सौभाग्य लुभाया
कल्प कल्प अब यु ही मिलते रहेंगे
जीवन अपना सुधार देवतुल्य बनायेंगे

ॐ शांति!!!